केंद्रीय भेड़ प्रजनन केंद्र ने मिक्स फार्मिंग का तैयार कराया विशेष मॉडल, किसान बढ़ा सकेंगे आमदनी

केंद्र के अंदर एक एकड़ में मछली पालन से लेकर बकरी, खरगोश, भेड़ पालन किया

भास्कर न्यूज | हिसार

केंद्रीय भेड़ प्रजनन केंद्र के अधिकारियों ने किसानों और पशुपालकों की आमदनी बढ़ाने के उद्देश्य से एक एकड़ में इंटी ग्रेटिड प्रोजेक्ट के तहत विशेष प्रकार का मॉडल तैयार कराया है। जिसमें एक ही स्थान पर मुर्गी, खरगोश, मछली और वर्मी कंपोस्ट पालन शुरू किया गया है। उक्त मॉडल को दिखाकर अधिकारी किसानों को एक ही स्थान पर मिक्स फार्मिंग कर आमदनी बढ़ाने के तरीके बतायेंगे। दरअसल, सरकार का प्रयास है कि वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दोगुना किया जाएं। ताकि वह कृषि और पशुपालन की और से मुंह न मोड़े। इसके लिए कई तरह की योजनाएं भी चलाई गई है।

केंद्रीय भेड़ प्रजनन केंद्र के निदेशक डा. एके मलहौत्रा ने बताया कि किसानों की आय को दोगुना करने, उन्हें पशुपालन के प्रति अब केंद्र के वैज्ञानिक और अन्य ट्रैंड करेंगे। किसानों की आमदनी बढ़ाने के उद्देश्य से ही केंद्र के अंदर एक एकड़ में विशेष प्रकार का मॉडल तैयार कराया गया है। मॉडल को दिखाकर किसानों को मिक्स फार्मिंग यानि एक साथ कई कई पशुओं को पालने के टिप्स दिए जायेंगे। किसान खरगोश, मछली, भेड़, बकरी पाल सकेंगे। वहीं दूध बेचकर भी मुनाफा कमाया जा सकेगा। यहीं नहीं वर्मी कंपोस्ट के माध्यम से भी आय कमाई जा सकेगी। किसानों के कृषि और पशुपालन से होते जा रहे मोहभंग को लेकर मॉडल तैयार कर मिक्स फार्मिंग के प्रति जागरूक करने का निर्णय लिया गया है।

केंद्रीय भेड़ प्रजनन केंद्र के पदाकारियों ने भेड़ और बकरी के नस्ल सुधार के लिए गांव में जाकर कृत्रिम गर्भाधान कराना भी शुरू किया जाएगा।

निःशुल्क देंगे ट्रेनिंग

निदेशक ने बताया कि यदि कोई भी किसान मिक्स फार्मिंग शुरू करना चाहता है तो उसे तैयार मॉडल दिखाया जाएगा। प्रैक्टिकल रुप से भी जानकारी दी जाएगी। इसके अलावा निःशुल्क मिक्स फार्मिंग के गुर देकर ट्रेंड किया जाएगा।

अन्य संस्थानों से भी किया गया है समन्वय स्थापित

निदेशक ने बताया कि किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से करनाल और अन्य स्थानों के रिर्सच सैंटरों से भी तालमेल स्थापित किया गया है। किसानों के लिए जल्द ही गोष्ठी और अन्य ट्रेनिंग भी आयोजित कराई जाएगी।

1968-70 में की गई थी भेड़ प्रजनन केंद्र की स्थापना

हिसार में केंद्रीय भेड़ प्रजनन फार्म की स्थापना वर्ष 1968-70 में की गई थी। यह केंद्र उस समय आस्ट्रेलियन सरकार की सहयोग से स्थापित किया गया था। उस समय हरियाणा सरकार ने फार्म को एक रुपए की लीज पर लगभग 6484 एकड़ जमीन दी थी। परंतु 1997 में प्रदेश सरकार ने फार्म से 4028 एकड़ जमीन वापस ले ली। फार्म के पास अब केवल 2456 एकड़ जमीन की बची है। फार्म ने भेड़ बकरियों की नई नस्ल और उन्हें बचाने के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है।